

राजू शर्मा के कथा साहित्य में आर्थिक स्थिति

उमा बणिचल

शोधार्थी

हिंदी विभाग, विश्वविद्यालय - हैदराबाद

समाज के महत्वपूर्ण अंग के रूप में अर्थ व्यवस्था को प्रमुख स्थान दिया जाता है। अर्थ के आधार पर ही मनुष्य का सामाजिक स्तर निर्धारित किया जाता है। राजू शर्मा के कथा साहित्य के अंतर्गत आर्थिक परिवेश एवं उसके विभिन्न पहलुओं को रूप प्रदान किया गया है। राजू शर्मा द्वारा रचित साहित्य में अर्थ के महत्व व आर्थिक परिवेश को यथार्थ रूप प्रदान करते हुए पाठक वर्ग एवं समाज के समक्ष प्रस्तुत किया है। इन्होंने आर्थिक रूप से मजबूत उच्चवर्ग एवं आर्थिक रूप से कमजोर निम्न वर्ग के साथ ही साथ मध्य वर्ग के विभाजन का एक प्रमुख आधार अर्थ को ही स्वीकार किया है।

आर्थिक रूप से मजबूत उच्च वर्ग जहाँ ऐशो आराम से युक्त जीवन जीता है वहीं आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग सुविधाहीन कमजोरी व लाचारी से युक्त जीवन यापन करने को बेबस व मजबूर नजर आता है। स्वामीराम प्रसाद 'हलफनामे' उपन्यास का एक ऐसा गरीब किसान है जो अत्यंत गरीबी व कष्टपूर्ण जीवन जीता है तथा इसी आर्थिक कमजोरी के कारण साहूकार के कर्ज में दब जाता है।

'शब्दों का खाकरोब' कहानी संग्रह के अंतर्गत 'मारफत' कहानी का प्रमुख पात्र 'हरप्रसाद द्विवेदी' मध्यवर्गीय जीवन को दर्शाता है जो कि कम खर्च द्वारा तथा अपनी मेहनत कर्म द्वारा अपने परिवार का भरण-पोषणकर संघर्षमय जीवन यापन करते हुए अपनी संतान को पढ़ा लिखा कर योग्य बनाता है।

अर्थ कहने से हमारा अभिप्राय अथवा प्रयोजन, किसी बात या शब्द की व्याख्या, धन, संपदा, या संपत्ति आदि को निरूपित करना है। अर्थ से ही आर्थिक शब्द की सृष्टि हुई है। अर्थ व्यवस्था संबंधी (जहाँ पर संकट, लाभ को दर्शाया जाए) ही आर्थिक है। आर्थिक स्थिति एक अर्थशास्त्र का हिस्सा है जिसमें यह कहा जाता है कि किसी भी चीज की आर्थिक स्थिति आर्थिक क्षेत्र सब कुछ आर्थिक से संबंधित है। आर्थिक स्थिति ही आर्थिक परिवेश को प्रभावित करती है। अर्थव्यवस्था समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है। वर्तमान युग अर्थ को महत्व देता है। अर्थ के बिना मनुष्य का जीवन निरर्थक है। अर्थ के आधार पर ही किसी का सामाजिक स्तर निर्धारित किया जाता है। उपन्यासकार राजू शर्मा के कथा साहित्य में आर्थिक परिवेश के विभिन्न पहलु दर्शाये गये हैं।

आर्थिक स्थिति- जीवन यापन करने के वै संसाधन है जो जीवन को सरलता प्रदान करते हैं यह संसाधन अनेक प्रकार के हो सकते हैं। यदि संसाधन की प्राप्ति सुगमता से होती है तो आर्थिक स्थिति मजबूत मानी जाती है। वहीं विपरित अवस्था में यदि यह संसाधन सरलता से प्राप्त न हो सके या बहुत कम मात्रा में प्राप्त हो तो आर्थिक स्थिति को कमजोर माना जाता है। राजू शर्मा के कथा साहित्य में आर्थिक स्थिति को निम्नलिखित रूप में दर्शाया गया है- हलफनामे' उपन्यास का प्रमुख पात्र स्वामीराम प्रसाद है जिसका देहांत हो चुका था। वह सवेरा गाँव में रहने वाला था। उस गाँव के अधिकतर लोग कृषि आधारित व्यवसाय करते थे। कृषि ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था का केन्द्र थी। स्वतंत्रता से पहले जमींदारी एवं साहूकारी व्यवस्था मजबूत स्थिति में थी। स्वतंत्रता के बाद भी कुछ दिन तक यही स्थिति कायम रही। जमीन के लिए किसानों को लगान देना पड़ता था। किसान जमीन के उपज से ही अपना परिवार चलाते थे उनके लिए और कोई रोजगार का रास्ता नहीं था। वे बहुत मुश्किल से जीवन

यापन करते थे। पीढ़ी दर पीढ़ी सत्र में आने से संतानों के बीच ज़मीन का बँटवारा हो जाता था तो ज़मीन का परिमाण घटता जाता था। जो परिवार की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करता था। इस बात की पुष्टी 'हलफनामे' उपन्यास के पुरुष पात्र स्वामीराम प्रसाद द्वारा इस प्रकार की गई है-

'स्वामीराम प्रसाद-एक किसान है सरकारी भाषा में एक 'लघु कृषक'। अट्टराह पुरतों से वे एक गाँव में रहते आए, पुरखों ने इसी ज़मीन की मुगलों को लगान दी। यह समझ तो अब आया है कि सरकार ने छोटे काश्तकारों की वसूली माफ कर दी, पर ज़मीन परिवार में बँटकर धीरे-धीरे घटती गई।" इस कथन के माध्यम से मकईराम अपने पिता स्वामीराम छोटे कृषक होने से सरकार ने कर माफ करने को दर्शाता है। इससे स्पष्ट रूप से देखने के लिए मिल रहा है कि स्वामीराम की ज़मीन बहुत कम, तथा लघु कृषक के रूप में परिचय हुआ तो इनकी आर्थिक स्थिति अच्छा न होना स्वाभाविक ही है।

'विसर्जन' उपन्यास में खलनायक के रूप में पी.वी.रंगराजन दर्शाया गया है। वह होनहार छात्र और वैज्ञानिक, एक मशहूर अर्थशास्त्री, मानद प्रोफेसर, मुक्त कंठ दार्शनिक, मनीषी एवं विचारक परोपकारी एवं दानवीर, व्यवसायी एवं बिलेनियर, उद्दमी एवं आविष्कारक, दिव्य दूरदृष्टा, युग प्रवर्तक तथा आध्यात्मिक गुरु के रूप में प्रसिद्ध थे। इनकी आर्थिक स्थिति को इस प्रकार उद्घाटित किया गया है-

'रंगराजन के तमाम काम और कारोबार है, उसकी कम्पनियाँ और संस्थानों का साम्राज्य अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फैला हुआ है।" इस संवाद में कहा गया है पी.वी. रंगराजन का कम्पनियाँ और संस्थानों सारे विश्व में फैला हुआ था, तो विश्व में इनकी ख्याति तथा प्रसिद्धि को दर्शाता है। इससे प्रतीत है कि रंगराजन विश्व भर अपना कारोबार को फैलाकर अपनी स्थिति को मजबूत रखा था।

पराधीन देश को आजाद करने में गाँधी जी की महत्वपूर्ण भूमिका है। ठीक उसी तरह आर्थिक समस्या की समय समस्या से उभरने के लिए पी.वी. का कार्य देश के लिए हितकर है। पी.वी. के तेज दिमाग को गाँधी जी के बुद्धि और विचार के साथ समानता देखते हुए कहा गया है कि-

"जिस तरह गांधी अंधेड उग्र में अचानक दक्षिण आफ्रीका से लौटा था, पी.वी. अमरीका से खास समय लौटा है। बहुत जल्दी महात्मा ने कांग्रेस पार्टी और देश की जनता पर अपना प्रभुत्व जमा लिया था। पी.वी. ने तमाम संस्थाओं का नेटवर्क तैयार किया है, वह उनका नेतृत्व कर रहा है। मिडिल क्लास उसका नित्य अभिनन्दन कर रही है। महात्मा गांधी ने चरखा, धोती और खादी को अपने आन्दोलन का प्रतीक बनाया, पी.वी. ने योग साधना की क्लट पैदा की, आर्थिक सुधार, अभिव्यंजना और अभिलाषा को खुशहाली का गुरुमंत्र बनाया और बचत, निवेश और विकास का सदगुरु चक्र। गांधीजी ने आजादी के लिए अहिंसा और सत्याग्रह का अनोखा तरीका ईजाद किया, पी.वी.ने बाजारवाद और ग्लोबलाइजेशन का एक देशी संस्करण सामने रखा। महात्मा गांधी ने आत्मत्याग और सरल जीवन का पाठ पढ़ाया था, और पी.वी. ने अनन्त अभिलाषा और लाभ के लिए उधारजनित उपभोग को दिव्य बोध की रोशनी दी।" इससे स्पष्ट होता है कि पी.वी. रंगराजन जैसे

व्यक्ति ने इतने सारे कारोबार देश-विदेश में फैलाकर अपनी आर्थिक स्थिति को ऊँचाई तक पहुँचाया।

‘विसर्जन’ उपन्यास में आदर्श दरबारी एक मुख्य पुरुष पात्र था। काजल दरबारी आदर्श दरबारी का बहन थी। अग्निवेश दरबारी उपन्यास का मुख्य नहीं सही लेकिन एक पुरुष पात्र था। अग्निवेश दरबारी का दो संतान थी एक लड़का जिसका नाम आदर्श दरबारी एवं एक लड़की जिसका नाम काजल दरबारी था। वह मध्यम वर्गीय व्यक्ति था। उनकी आर्थिक स्थिति मध्यम थी। अपनी नौकरी के साथ-साथ वह अपनी इच्छा पूर्ति के लिए भी दवाई देने का कार्य करता रहता था, जो उपन्यास में इस तरह वर्णित किया गया है-

“काजल दरबारी। उसका बाप किसी सरकारी दफ्तर में काम करता था और शाम को घर से एक आयुर्वेद दवाखाना चलाता था।” इस संवाद में ऐसार् ने काजल दरबारी की पारिवारिक, आर्थिक स्थिति को दर्शाता है। इससे स्पष्ट होता है कि दरबारी परिवार का आर्थिक स्थिति मध्यम थी। आजादी के कई दशक बाद भी भारत अनेक समस्याओं से घिरा रहा। गाँव के ज्यादातर लोगों की जिंदगी कृषि पर निर्भर करती है। ज्यादातर ग्रामीण किसान होते हैं। कुछ लोग पशुपालन और कृषि आधारित कुटीर शिल्पों, उद्योगों द्वारा भी जीविकापार्जन करते हैं। वे काफी मेहनती, नम्र एवं उदार होते हैं। इसके बावजूद भी अपने परिवार का गुजारा अच्छे से नहीं कर पाते अतः आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु दूसरी जगह पर भी मेहनत-मजदूरी करने के लिए जाते हैं।

कहानी संग्रह ‘शब्दों का खाकरोब’ में ‘मुकदमा’ एक प्रमुख कहानी है। इस कहानी के प्रमुख पात्र पूरन की आर्थिक स्थिति के बारे में इस प्रकार कहा गया है- “पूरन एक सीमान्त कृषक है- सभ्यता के कगार पर खड़ा कुल मिलाकर डेढ़ बिघा पुख्ता खेत है। ले-देकर यही एक संपत्ति है जिससे परिवार का गुजारा होता है। खाली समय में सुमति (पूरन की पत्नी) और पूरन फार्म (फार्म) पर मजदूरी करते हैं।” इस संदर्भ से पता चल रहा है कि पूरन की आर्थिक स्थिति सही नहीं लेकिन सामाजिक जीवन शैली में वह जैसे-तैसे अर्थात् कृषि मजदूरी करके अपने परिवार को चलाने की कोशिश करता है उदाहरण निम्नलिखित है-

‘शब्दों का खाकरोब’ में ‘चिट्ठी के मारफत’ कहानी के अंतर्गत हरप्रसाद द्विवेदी की कहानी के मुख्य पात्र है। वह ऑफिस का जूनियर क्लर्क था। वह प्रति दिन ठीक समय में अपने ऑफिस आकर अपना काम करता था। केवल ऑफिस नहीं परिवार में भी सीमित रोजगार होने के बावजूद अपनी समस्त जिम्मेदारियाँ निभाता था। उसने अपनी प्रति होने की, पिता होने की जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। अपनी संतान को पढ़ा-लिखा कर योग्य बनाया। जिससे उसे अपने अंदर सुकून की अनुभूति होती जिसका उदघाटन कहानी में इस प्रकार हुआ है-

“घर की सब जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। बड़ा लड़का शहर में ही वकील है, इस बात का उन्हें गर्व है।” इससे स्पष्ट होता है कि हरप्रसाद द्विवेदी ने अपनी आर्थिक स्थिति को सही रखते हुए अपने परिवार का निर्वाह सुचारू रूप से किया जो उनके लिए एक गर्व की बात है।

‘शब्दों का खाकरोब’ कहानी संग्रह में ‘मोटी बातें’ कहानी में मन्नीलाल गुप्ता मुख्य पात्र है। कहानी की ईर्द-गिर्द उनकी जीवन शैली, सोच आदि को रखा गया है। उनके परिवार में तीन पुत्र व चार पुत्रियाँ, पत्नी एवं पिता थे। इनकी बातचीत तथा सोच विचार से पता चलता है कि वह खुश मिजाज आदमी था। एम.एस.गुप्ता नाम से इनका अपना एक उद्योग-धंधा था। उसके वह मालिक थे। जिसके बारे कहा गया है कि-

“जिस शख्स का जिक्र हो रहा है उसका नाम श्री मन्नीलाल गुप्ता है। एम.गुप्ता ग्रुप का मालिक। उद्योग और व्यापार की दुनिया में जाना-माना नाम।” इससे स्पष्ट होता है कि मन्नीलाल गुप्ता एक कंपनी के

मालिक है जिससे इनकी आर्थिक स्थिति अच्छा होना स्वाभाविक था। ‘समय के शरणार्थी’ कहानी संग्रह में ‘नोटिस’ कहानी में समझावन मुख्य पात्र है। वह गाँव का रहने वाला था। माता-पिता के मृत्यु के बाद सोलह साल की उम्र में वह शहर आ गया था। वह गाँव में हाई स्कूल तक पढ़ा था। जीवन को जीने की तलाश में कुछ साल व्यतित हो गए। तत्पश्चात उसकी दोस्ती सूरि भाई से हुई। समझावन का विवाह तुलसी से हुआ। समझावन की आर्थिक स्थिति के बारे में इस प्रकार वर्णन किया गया है- “किसी सरकारी कार्यालय में प्रवेश पाने के लिए निकल, उसके हाथ में एक थैला होता था। चूँकि तेज गर्मी थे और बिना किसी पूर्व आहट के यदा-कदा मूसलधार बोरिश हो जाया करती थी, वह एक छतरी अपने पास रखता था। सूरि भाई से उसने इन दिनों साईकिल माँग ली थी। साईकिल के पीछे कैरियर में उसका एक छोटा सा टिफिन लगा रहता था।” इस कथन के माध्यम से समझावन ने सरकारी कार्यालय में नौकरी पाने के लिए किये हुए संघर्ष को दर्शाता है। इससे स्पष्ट होता है कि समझावन की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। जीवन जीने के लिए रोजगार पाने के लिए उसे रोज भटकना पड़ती है।

कहानी संग्रह ‘समय के शरणार्थी’ में ‘कान्ता’ एक प्रमुख कहानी है। कहानी का शीर्षक कहानी के मुख्य नारी पात्र का नाम पर आधारित है ‘कान्ता’। कान्ता आपनी माँ के साथ गाँव में रहती थी।

कान्ता के परिवार में और कोई नहीं थे इसलिए बहुत मुश्किल से अपना गुजारा करती थी। उसकी आर्थिक स्थिति का पता निम्नलिखित बातों से चलता है-

“कान्ता शहर से कोई सात मील दूर एक गाँव की रहने वाली है। पहले वह अपनी लंगड़ी माँ के साथ रहती थी। माँ-बेटी झाड़ू बनाने का काम करती थी। उसकी माँ को पागलपन का रोग हुआ और वह चल बसी।” इस संवाद के माध्यम से वकील ने कान्ता की लाचारी आर्थिक स्थिति के बारे में दर्शाता है। इससे लक्षित होता है कि कान्ता की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। यदि आर्थिक स्थिति सही रही होती तो शायद वह अपनी माँ को रोग से मुक्त कर पाती। कम से कम जीवन में अकेली न होती या बेसहरा न बनती। बेसहरापन बाद में जा कर उसको कलंकिनी बना देता है तथा समाज में उसे लांछित भी होना पड़ता है।

कहानी संग्रह ‘नहर में बहती लारों’ के अंतर्गत ‘आई.टी.ओ क्रॉसिंग’ एक मुख्य कहानी है। इस कहानी का मुख्य पात्र एक बालक है। बालक की मनःस्थिति को कहानी में अभिव्यक्त किया गया है उस बालक का नाम लोबन था। लोबन पन्द्रह साल का था। उसका घर सहारनपुर जिले के एक गाँव में था। वह जब गाँव में माँ के साथ रह रहा था तो इनके जीवन में घर, ज़मीन, ढोर-डगर सब कुछ बेहतर था। एक दिन अचानक माता का स्वर्गवास हो गया। गाँव में किसी रिश्ते से एक मोटे मामा ने उसका जिम्मा ले लिया। मामा के साथ उसका मन न लगा तथा मामा के साथ एक साल रहने के बाद एक दिन उसने अपना स्कूल बैग उठाया और गाँव से दिल्ली शहर भागा गया। दिल्ली की सड़कों को अपना घर बनाया। न उनके पास रहने के लिए घर न ही कुछ खाने के लिए था। आर्थिक स्थिति सही नहीं होने के कारण उसे जीने के लिए संघर्ष करना पड़ा। उसका जीवन खतरों से घिरा रहा, जिसके विषय में कहानी में इस प्रकार लिखा गया-

“लड़का अब करीब पन्द्रह साल का लगता है। तीन साल पहले वह घर से भागा और दिल्ली की सड़कों को अपना घर बनाया। नन्हा बालक ऐसे पाशविक खतरों से घिरा था जिनका उसे धुँधला अनुमान भर था।” इससे देखने को मिलता है कि लोबन का पास यदि पैसा होता तो कम से कम दिल्ली की सड़कों को अपना घर न बनाना पड़ता। खाने के लिए नन्हें से बालक को पाशविक खतरों से न गुजरना पड़ता।

कहानी संग्रह 'नहर में बहती लाशों' में 'जलन' एक सामाजिक कहानी है। कहानी में शशिबाला और रजनीबाला नामक दो नारी पात्र हैं और जो बहने हैं। शशिबाला बड़ी और रजनीबाला छोटी। मनहरलाल और मदनलाल दो भाई हैं। बड़े भाई मनहरलाल ने शशिबाला से शादी की। कुछ साल बाद शशिबाला ने अपना छोटी बहन रजनीबाला का विवाह अपने देवर मदनलाल के साथ करवा दिया। शशिबाला के दो बेटे थे तथा रजनीबाला की तीन बेटे और एवं एक बेटी थी। शहर से थोड़े दूरी पर दोनों परिवार रह रहे थे। उनकी एक छोटी सी किराने की दुकान थी जिससे पूरे परिवार का गुजारा होता था। परिवार के सदस्य ज्यादा थे एवं रोजगार का स्रोत केवल वह दुकान थी। दिन भर परिश्रम करने पर भी गुजारा बहुत मुश्किल था। आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण, वे बहुत परेशान हो गये। आर्थिक स्थिति के अच्छे न होने के कारण छोटी बहन रजनीबाला ने अपनी बड़ी बहन शशिबाला से कुछ इस प्रकार कहा-“दीदी, क्या ये सब झेलने के लिए पैदा हुए थे। इससे तो कुकुर अच्छे हैं। अलग-अलग घर का भरपूर जूठन तो मिल जाता है कम-से-कम। हमारे तो ढाक के वही तीन पातां रोज एक ही राग, वही झमले... मैं तो बाज आई दीदी... आँखें खोलो तो वही जंगला, वही आँगन, रोज मशीन की तरह पिसो और रात को निकले वही धुन लागा गेहूँ... रोज चिल्लर गिनते रहो और बाचता है वही दो आना...।” इस कथन के माध्यम से रजनीबाला पारिवारिक जीवन की आर्थिक स्थिति को दर्शाता है। इससे दृष्टिगत होता है कि उनकी आर्थिक स्थिति उनकी सामाजिक जीवन शैली को प्रभावित कर रही थी।

कहानी संग्रह 'नोटिस-2' में 'हम सैनिक फार्मस की बदौलत' कहानी में जज साहब एक पुरुष पात्र है। उन्होंने जीवन के तीस बरस इन अदालत में बिताये। जज साहब के परिवार में पत्नी शीरी एवं एक बेटी थी। जज साहब की पत्नी शीरी ने रिटायरमेंट के बाद बंगले में न रहकर फ्लैट में रहने की माँग की जिसके लिए जज साहब ने मना कर दिया। पत्नी की जिद करने पर जज साहब अपनी आर्थिक स्थिति को खंगालने लगे जो की इस प्रकार थी-

“जज ने बचत और खाते का हिसाब लगाया। कितने पेंशन होगी। पी एफ और ग्रेचुइटी। लीव का नकद। कितना कर्जा ई एम आई पर उठा सकता है। इतने से इस सफेद के जोड़ से, पूरा नहीं हो रहा था। पर और भी पैसा था।” इससे प्रतीत होता है कि जीवन को साधारण तौर से जीने के लिए आर्थिक स्थिति का ठीक होना आवश्यक है। जज साहब ने गलत तरीके से धन नहीं जुटाया जिसके कारण वह धनाढ्य एवं पूँजीपति न बन सके। जिसके कारण आज वे जिंदगी भर की कमाई को इकट्ठा करने के बावजूद एक फ्लैट के लिए पैसे जुटाने में नाकामयाब रहे। पत्नी की इच्छा को पूरी नहीं कर पायी।

संदर्भ

1. राजू शर्मा- हलफनामे, पृ. - 07.
2. राजू शर्मा- विसर्जन, पृ. - 104.
3. राजू शर्मा- विसर्जन, पृ. - 110.
4. राजू शर्मा- विसर्जन, पृ. - 17.
5. राजू शर्मा- शब्दों का खाकरोब, पृ. - 72.
6. राजू शर्मा- शब्दों का खाकरोब (चिट्ठी के मारफत), पृ. - 18.
7. राजू शर्मा- शब्दों का खाकरोब (मोटी बातें), पृ. - 78.
8. राजू शर्मा- समय के सरणार्थी (नोटिस), पृ. - 14.
9. राजू शर्मा- समय के सरणार्थी (कान्ता), पृ. - 62.
10. राजू शर्मा- नहर में बहती लाशें (आई.टी.ओ क्रॉसिंग), पृ. - 42.
11. राजू शर्मा- नहर में बहती लाशें (जलन), पृ. - 87.
12. राजू शर्मा- नोटिस-2(हमसैनिक फार्मस की बदौलत), पृ. - 141.

Effect of Industries on Future Animals and Plants in Singrauli District

Dr. Vishwanath Singh Kushram

Assistant Professor Botany

PMCOE Govt Rajnarayan Smriti P.G. College Waidhan
Singrauli(M.P.)

Mail-id-drsvskushram123@gmail.com

Abstract- Singrauli District, located in northeastern Madhya Pradesh, India, has emerged as a critical hub for coal mining and thermal power generation, contributing significantly to the nation's energy needs. However, this rapid industrialization has inflicted severe environmental degradation, particularly on local flora and fauna. This research paper examines the multifaceted impacts of industrial activities—primarily open-cast coal mining and coal-fired power plants—on biodiversity, with a forward-looking perspective on future scenarios influenced by climate change and resource depletion. Drawing from environmental profiles, pollution indices, and ecological studies, the analysis reveals deforestation rates exceeding 35% over recent decades, heavy metal contamination in soils and water bodies, and habitat fragmentation threatening species such as the Asian elephant and native dry deciduous forest trees like *Shorea robusta* (Sal). Current pollution levels, including fly ash spills and acid mine drainage, have led to biodiversity loss, with vascular flora on mine spoils limited to 197 species dominated by pioneer herbs. Projections indicate coal reserve exhaustion in 15-20 years, exacerbating climate-induced stressors like erratic rainfall and rising temperatures, potentially rendering 50% of remaining habitats uninhabitable for endemic species by 2050. Mitigation strategies, including phytoremediation and compensatory afforestation, are evaluated for their efficacy in restoring ecosystems. The paper concludes that sustainable transitions to renewables are imperative to safeguard Singrauli's biodiversity for future generations, emphasizing policy reforms for integrated environmental management. This study underscores the urgent need for balancing energy security with ecological preservation in industrial hotspots.

Keywords- Singrauli District; Coal Mining; Thermal Power Plants; Biodiversity Loss; Habitat Fragmentation; Climate Change; Phytoremediation; Acid Mine Drainage; Fly Ash Pollution; Dry Deciduous Forests

Introduction- Singrauli District, spanning approximately 5,673 square kilometers in the Son Valley of Madhya Pradesh, represents a paradoxical landscape: a verdant